नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 03.02.2018

प्रकाशनार्थ

हिन्दी भारत की मौलिक भाषा है। यह प्यार, प्रार्थना एवं संस्कार की भाषा है। संस्कृत से निकली होने के कारण यह समृद्ध भाषा है। हिन्दी में भाव–जगत के जो शब्द है, वह अंग्रेजी में मिल ही नहीं सकते। इसीलिए भारत के स्वाधीनता संग्राम की भाषा हिन्दी ही बनी। हिन्दी का विस्तार हो रहा है। वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी का प्रसार जारी है। दुनिया के अनेक भागों में अब हिन्दी बोली जा रही है। हम हिन्दी भाषी लोगों के मन में हिन्दी के साथ हीनता की जो ग्रन्थि बनी है, उसे तोड़ने की जरूरत है।

उक्त बातें महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ के सहयोग से 'स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के विधान सभा अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित ने कही।

श्री हृदय नारायण दीक्षित ने कहा कि महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, डॉ राजेन्द्र प्रसाद सभी हिन्दी के हिमायती थे। संविधान सभा मे जवाहर लाल नेहरू भी हिन्दी के पक्ष में बोले किन्तु संविधान में हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल सका जिसका वह हकदार थी। संविधान में किन्तु–परन्तु के साथ हिन्दी राजभाषा है किन्तु वास्तविक रूप में भारत की जनता के बीच वह राष्ट्रभाषा के रूप में ही प्रचलित है। आज केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र इत्यादि सभी दक्षिणी भारत के प्रदेशों में हिन्दी का विस्तार हो रहा है। हिन्दी हर जगह बोली जा रही है। हिन्दी ने अपना वैश्विक विस्तार का दायरा बढ़ाया हैं। हम हिन्दी भाषी हिन्दी के शुद्ध उपयोग के प्रति सचेत हों।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो0 सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का कार्य हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना है। यह संस्थान देश ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु कटिबद्ध है। हिन्दी आज अपने बल पर तेजी से आगे बढ़ रही है। कोई भी सरकार अब हिन्दी की विकास–यात्रा में अवरोधी नहीं हो सकती, किन्तु हिन्दी को अपने विकास के आयाम बढ़ाने हैं। उसे भारत के जन–जन की भाषा बनानी होगी। भारत वास्तव में संस्कृत एवं हिन्दी में ही अभिव्यक्त हो सकता है। यह राष्ट्रीय कार्यशाला हिन्दी के विकासात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने मे महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।

(क्रमशः पेज ....2 पर)

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के पूर्व अध्यक्ष डॉ0 कन्हैया सिंह ने कहा कि हिन्दी के आदि कवि महायोगी गोरखनाथ हैं। ऐसे में गोरक्षपीठ के इस महाविद्यालय में हिन्दी की विकास यात्रा पर आयोजित यह विमर्श और प्रासंगिक हो जाता है।

प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुए प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हिन्दी की विकास–यात्रा में इस महाविद्यालय की भी उल्लेखनीय भूमिका है। हमने नैक कराने हेतु स्व–अध्ययन रिपोर्ट हिन्दी में भेजा। नैक द्वारा भाषा के आधार पर अस्वीकृत किए जाने पर तीन वर्ष की लड़ाई के बाद नैक को हिन्दी में स्व–अध्ययन रिपोर्ट स्वीकार करनी पड़ी। यह महाविद्यालय देश का पहला महाविद्यालय है जिसका नैक मूल्यांकन हिन्दी में किया गया। हमने नैक में हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलायी है।

उद्घाटन समारोह का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने किया। सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ उद्घाटन समारोह राष्ट्रगीत वन्देमातरम के साथ सम्पन्न हुआ। आकांक्षा सिंह, प्रिया वर्मा, वर्षा जायसवाल, वैष्णवी मिश्रा, अम्बिका सिंह एवं ललिता ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर देश भर से आए हुए लगभग 200 प्रतिनिधि महाविद्यालय की छात्र–छात्राओं के साथ प्रो0 ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्रो0 रविशंकर सिंह, प्रो0 मानवेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ0 वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो0 शिवशरण दास, डॉ0 अवधेश अग्रवाल, प्रो0 महेश कुमार शरण, डॉ0 उग्रसेन सिंह, डॉ0 शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ0 हरेन्द्र शर्मा, प्रो0 राजेन्द्र भारती, श्री प्रदीप कुमार, डॉ0 डी0पी0 सिंह, डॉ0 योगेन्द्रं प्रताप सिंह, डॉ0 सन्तोष सिंह इत्यादि उपस्थित थे।

(डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी